अथ हरितालिकाव्रत कथा

भाषा टीका सहित

अथ

हरितालिकाव्रतकथा सटीक

प्रकाशक

तेजकुमार बुकडिपो (प्रा0) लिमिटेड,

पोस्ट बाक्स नं0 85, 1 त्रिलोकनाथ रोड, लखनऊ।

श्रीमती स्मिता पटवर्धन, प्रबन्ध संचालक, द्वारा राजाराम कुमार प्रेस, लखनऊ में मुद्रित।

तृतीय बार २००० सन २००३ ई० मूल्य ५/- रुपया

अथ हरितालिकाव्रत की सामग्री

—:०:—

१ कदलीस्तम्भ
२ आम्रपल्लव तोरण
३ पंचपल्लव
४ कलश
५ यज्ञोपवीत
६ पंचरत्न
७ वस्त्रोपवस्त्र
८ सिंदूर
९ तंदुल
१० कुंकुम
११ अबीर
१२ गुलाल
१३ धूप
१४ दीप
१५ पुष्प
१६ नारिकेलफल
१७ ताम्बूलदल
१८ पुंगीफल
१९ ऋतु-फल
२० पुष्प-माला
२१ पुण्याहवाचन
२२ रंगवल्ल्यार्थरंग
२३ दक्षिणा द्रव्य
२४ नैवेद्य
२५ विल्वपत्र
२६ मेहँदी

इति

अथ हरितालिकाव्रतम्

—:०:—

श्रीगणेशाय नमः ॥ भाद्रपदशुक्लतृतीया में हरितालिका का व्रत करना चाहिए। यह व्रत परविद्धा तिथि में होता है। जिस दिन मुहूर्त्तमात्र भी तृतीया हो उसी दिन गौरीव्रत करे। व्रतविधि। मासपक्षावुल्लिख्य मम सकलपापक्षयपूर्वकसप्तजन्मराज्यसौभाग्यविवृद्धये उमामहेश्वरसायुज्यतासिद्धयर्थं हरितालिकाव्रतं करिष्ये ॥ इस प्रकार से संकल्प करे ॥ तत्रादौ गौरीयुक्तम्महेश्वरम्पूजयिष्ये। अथ ध्यानम्—"पीतकौशेयवसनां हेमाभां कमलासनाम्। भक्तानां वरदां नित्यं पार्वतीं चिन्तयाम्यहम् ॥ १ ॥ मन्दारमालाकुलितालकायै कपालमालाङ्कितशेखराय। दिव्याम्बरायै च दिगम्बराय नमश्शिवायै च नमश्शिवाय ॥ २ ॥" इति ध्यानम्। "देवि देवि समागच्छ प्रार्थयेऽहं जगन्मये। इमां मया कृतां पूजां गृहाण सुरसत्तमे ॥" (शिवगौरीभ्यान्नमः) इस मन्त्र से आवाहन करे। "भवानि त्वं महादेवि सर्वसौभाग्यदायिके। अनेकरत्नसंयुक्तमासनं प्रतिगृह्यताम् ॥" इस मन्त्र से आसन दे। "सुचारु शीतलं दिव्यं नानागन्धसमन्वितम्। गृहाण देवदेवेशि महादेवि नमोऽस्तु ते ॥" इस मन्त्र से पाद्य दे। "श्रीपार्वति महाभागे शङ्करप्रियवादिनि। अर्घ्यं गृहाण कल्याणि भर्त्रा सह पतिव्रते ॥" इस मन्त्र

से अर्घ्य देवे। "गंगाजलं समानीतं सुवर्णकलशे स्थितम्। आचम्यतां महाभागे रुद्रेण सहितेऽनघे॥" इस मन्त्र से आचमन करावे। "गंगासरस्वतीरेवाकावेरीनर्मदाजलैः। स्नापितासि मया देवि तथा शान्तिं प्रयच्छ मे॥" इस मन्त्र से स्नान करावे। कहे हुए मन्त्रों से पञ्चामृत स्नान करावे। "आप्यायस्व०" इस मन्त्र से दुग्ध-स्नान करावे। "दधिक्राव्ण०" इस मन्त्र से दधि-स्नान करावे। "घृतमिमिक्ष०" इस मन्त्र से घृत-स्नान करावे। "मधुवाता०" इस मंत्र से मधुस्नान करावे। "स्वादुःपवस्व०" इससे शर्करा-स्नान करावे। ये पञ्चामृत हैं। "आपोहिष्ठा०" इस मंत्र से शुद्धोदक स्नान करावे। सुगन्ध वस्तु मिलाके हल्दी से उबटना दे। पुनराचमनम्। "सर्वसत्त्वाधिके रम्ये लोकलज्जानिवारणे। मयोपपादिता तुभ्यं वाससी प्रतिगृह्यताम्॥" इस मन्त्र से वस्त्र चढ़ावे। "कर्पूरागुरुसंघृष्टकुङ्कुमादिसमन्वितम्। कस्तूरिकासमायुक्तं चन्दनं प्रतिगृह्यताम्॥" इस मन्त्र से चन्दन चढ़ावे। "रञ्जिताः कुसुमौघेन अक्षताश्चातिशोभनाः। ममैषां देवि दानेन प्रसन्ना भव पार्वति॥" इस मन्त्र से अक्षत चढ़ावे। "सन्मल्लिकाबकुलचम्पकपाटलाब्जैः पुन्नागजातिकरवीररसालपुष्पैः। बिल्वप्रवालतुलसीदलमालतीभिस्त्वाम्पूजयामि जगदीश्वरि मे प्रसीद॥" इस मन्त्र से पुष्प चढ़ावे। "देवद्रुमरसोद्भूतः कृष्णागुरुसमन्वितः। आनीतोऽयम्महाधूपो भवानि प्रतिगृह्यताम्॥ इस मन्त्र से धूप दे। "त्वं ज्योतिस्सर्वदेवानां तेजसां तेज उत्तमम्। आत्मज्योतिः परंधाम दीपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥" इस मन्त्र से दीप दिखावे। "अन्नञ्च विविधं स्वादु रसैः षड्भिस्समन्वितम्। भक्ष्यभोज्यसमायुक्तं नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्॥" इस

मन्त्र से नैवेद्य लगावे। पुनराचमनम् "मलयाचलसम्भूतं कर्पूरेण समन्वितम्। करोद्वर्तनकं चारु गृह्यतां जगतः पते ॥" इस मन्त्र से हाथ धुलावे। "इदंफलम्०" इस मन्त्र से फल चढ़ावे। "कर्पूरैलालवङ्गादि ताम्बूलीदल संयुतम्। क्रमुकस्य फलञ्चैव ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ॥" इस मन्त्र से ताम्बूल चढ़ावे। "हिरण्यगर्भः०" इस मन्त्र से दक्षिणा चढ़ावे। "वज्रमाणिक्यवैदूर्य्यमुक्ताविद्रुममण्डितम्। पुष्परागसमायुक्तं काञ्चनं प्रतिगृह्यताम् ॥" इस मन्त्र से सुवर्णपुष्प चढ़ावे। "चन्द्रादित्यौ च धरणी विद्युदग्निस्तथैव च। त्वमेव सर्वतेजांसि आर्तिक्यम्प्रतिगृह्यताम् ॥" इस मन्त्र से अन्त की आरती करे। (अथ नामपूजा) उमायै नमः, गौर्यै नमः, पार्वत्यै नमः, जगद्धात्र्यै नमः, जगत्प्रतिष्ठायै नमः, शान्तिरूपिण्यै नमः। हराय नमः, महेश्वराय नमः, शम्भवे नमः, शूलपाणये नमः, पिनाकधृषे नमः, शिवाय नमः, पशुपतये नमः, महादेवाय नमः ॥ (पुष्पाञ्जलि) "यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च। तानि सर्वाणि नश्यन्ति प्रदक्षिणपदे पदे ॥" इस मन्त्र से प्रदक्षिणा करे। "अन्यथा शरणन्नास्ति त्वमेव शरणं मम। तस्मात्कारुण्यभावेन रक्ष रक्ष महेश्वरि ॥" इस मन्त्र से नमस्कार करे। तत्पश्चात्ताम्रपात्रस्थ बायन अर्थात् ताम्रपात्र में पक्वान्न भरके देवता को चढ़ावे। "अन्नं सवर्णपात्रस्थं सवस्त्रफलदक्षिणम्। वायनङ्गौरि विप्राय ददामि प्रीतये तव ॥ सौभाग्यारोग्यकामानां सर्वसम्पत्समृद्धये। गौरीगिरीशतुष्टयर्थं वायनान्ते ददाम्यहम् ॥" इन दो मन्त्रों से ब्राह्मणों को बायन दे। इति व्रतविधिः ॥ * ॥

———:०:———

अथ कथा ॥ मन्दारवृक्ष के फूलों की माला से दबी है अलक चोटी जिनकी ऐसी शिवा पार्वती और कपालमाला से अङ्कित शेखर अर्थात् मस्तक जिन शिवजी का ऐसी दिव्याम्बरा शिवा और दिगम्बर शिव को नमस्कार है ॥ १ ॥ कैलास पर्वत रमणीय शिखर के ऊपर शङ्करजी से गौरी पूछती हैं कि हे महेश्वर !

मन्दारमालाकुलितालकायै कपालमालाङ्कितशेखराय । दिव्याम्बरायै च दिगम्बराय नमः शिवायै च नमः शिवाय ॥ १ ॥ कैलाशशिखरे रम्ये गौरी पृच्छति शङ्करम् ॥ गुह्याद् गुह्यतरं गुह्यङ्कथयस्व महेश्वर ॥ २ ॥ सर्वेषां धर्मसर्वस्वमल्पायासं महत्फलम् ॥ प्रसन्नोऽसि यदा नाथ तथ्यम्ब्रूहि ममाग्रतः ॥ ३ ॥ केन त्वं हि मया प्राप्तस्तपोदानव्रतादिना ॥ अनादिमध्यनिधनो भर्त्ता चैव जगत्प्रभुः ॥ ४ ॥ ईश्वर उवाच ॥ शृणु देवि प्रवक्ष्यामि

गुप्त से गुप्ततर व्रत हमसे कहो ॥ २ ॥ हे स्वामिन् ! यदि आप प्रसन्न हों तो सम्पूर्ण धर्मों का सारांश और थोड़े परिश्रम में बड़े फल को देनेवाला सत्य सत्य मेरे सम्मुख कहिये ॥ ३ ॥ किस दान व व्रत आदि से आदि, मध्य, अन्त से रहित सम्पूर्ण जगत् के स्वामी आप मुझे प्राप्त हुए ॥ ४ ॥ महादेवजी कहते हैं कि हे

देवि ! तुम्हारे सम्मुख अतीव गुप्त व्रत कहते हैं उसको सुनो ॥ ५ ॥ जैसे नक्षत्रों में चन्द्रमा और ग्रहों में सूर्य और जैसे चारों वर्णों में ब्राह्मण और जैसे सम्पूर्ण देवताओं में सबसे विष्णु उत्तम हैं ॥ ६ ॥ जैसे सम्पूर्ण नदियों में गङ्गाजी श्रेष्ठ हैं समस्त पुराणों में महाभारत और सब वेदों में सामवेद और जैसे ग्यारह इन्द्रियों

तवाग्रे व्रतमुत्तमम् ॥ यद्गोप्यम्मम सर्वस्वं कथयामि तव प्रिये ॥ ५ ॥ यथा चोडुगणे चन्द्रो ग्रहाणाम्भानुरेव च ॥ वर्णानाञ्च यथा विप्रो देवानां विष्णु-रुत्तमः ॥ ६ ॥ नदीषु च यथा गङ्गा पुराणानां तु भारतम् ॥ वेदानाञ्चयथा-साम इन्द्रियाणांमनो यथा ॥ ७ ॥ पुराणवेदसर्वस्वमागमेन यथोदितम् ॥ एकाग्रेण शृणुष्वैतद्यथादृष्टम्पुरातनम् ॥ ८ ॥ येन पुण्यप्रभावेण प्राप्तमर्द्धा-सनम्मम ॥ सर्वं तत्कथयिष्येऽहं त्वम्मम प्रेयसी यतः ॥ ९ ॥ भाद्रे मासि

में मन सबसे श्रेष्ठ है ॥ ७ ॥ शास्त्रों में कहा वेद और पुराणों का सर्वस्व प्राचीन यथादृष्ट जो व्रत उसको एकाग्र मन हो सुनो ॥ ८ ॥ जिस पुण्य के प्रभाव से तुमने हमारे अर्द्ध आसन को पाया सो सब तुमसे कहेंगे क्योंकि तुम हमारी प्यारी हो ॥ ९ ॥ भादों मास के शुक्लपक्ष की हस्त नक्षत्र और सोमवार से युक्त

तृतीया के अनुष्ठानमात्र ही से सब पापों से छूट जाता है ॥ १० ॥ हे देवि ! पूर्व ही जिस बड़े व्रत को तुमने किया है सो वृत्तान्त सहित तुमसे कहेंगे सुनो ॥ ११ ॥ पार्वतीजी कहती हैं कि सब व्रतों से उत्तम व्रत को मैंने किस प्रकार किया है ? हे महेश्वर ! आपसे यह सब सुनने

सिते पक्षे तृतीया हस्तसोमयुक् ॥ तदनुष्ठानमात्रेण सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ १० ॥ शृणु देवि त्वया पूर्वं यद्व्रतञ्चरितम्महत् ॥ तत्सर्वङ्क थयिष्यामि यथावृत्तं हिमाचले ॥ ११ ॥ पार्वत्युवाच ॥ कथं कृतम्मया नाथ व्रतानामुत्तमं व्रतम् ॥ तत्सर्वं श्रोतुमिच्छामि त्वत्सकाशान्महेश्वर ॥ १२ ॥ ईश्वर उवाच ॥ आसीत्तत्र महादिव्यो हिमवान्नग उत्तमः ॥ नानाभूतिसमाकीर्णो नाना-द्रुमसमाकुलः ॥ १३ ॥ नानापक्षिसमायुक्तो नानामृगविचित्रितः ॥ यत्र

की मेरी इच्छा है ॥ १२ ॥ महादेवजी कहते हैं कि नाना प्रकार की भूतियों से युक्त और नाना प्रकार के वृक्षों से व्याप्त महादिव्य हिमवान्नाम पर्वत था ॥ १३ ॥ और नाना प्रकार के पक्षी और मृगों करके विचित्रित था । जिसमें देवता, गन्धर्व, सिद्ध, चारण, गुह्यक विचरते

हैं ॥ १४ ॥ और गन्धर्वों के शब्द से व्याप्त और स्फटिक काञ्चनमणि वैडूर्यविभूषित शृंगों से शोभित था ॥ १५ ॥ अपनी भुजाओं से आकाश को छूता और हिम से युक्त और गङ्गा के शब्द से शब्दायमान था ॥ १६ ॥ हे पार्वति ! उसी हिमालय में तुमने बाल्यावस्था में अधोमुखी हो धूमपान कर बारह वर्ष

देवाः सगन्धर्वास्सिद्धचारणगुह्यकाः ॥ १४ ॥ विचरन्ति यथा देवि गन्धर्व-ध्वनिसंकुलम् ॥ स्फाटिकैः काञ्चनैः शृङ्गैर्मणिवैदूर्यभूषितैः ॥ १५ ॥ भुजै-र्लिखन्निवाकाशं सुहृदो मंदिरं यथा ॥ हिमे न सहितो नित्यं गङ्गाध्वनि-निनादितः ॥ १६ ॥ पार्वति त्वं तत्र बाल्ये परमञ्चाचरस्तपः ॥ अब्दद्वादशकं देवि धूमपानमधोमुखी ॥ १७ ॥ संवत्सरञ्चतुष्षष्टिपक्वपर्णाशनं कृतम् ॥ दृष्ट्वा तातेन तत्कष्टं चिन्तया दुःखितोऽभवत् ॥ १८ ॥ कस्मै देया मया कन्या एवञ्चिन्तातुरोऽभवत् ॥ तदैवाम्बरतः प्राप्तो ब्रह्मपुत्रस्तु धर्म्म-

तक परम तप किया ॥ १७ ॥ और चौंसठि वर्ष तक सूखे पत्ते खाये, तब तुम्हारे पिता इस कष्ट को देख दुःखित हुए ॥ १८ ॥ इस कन्या को किसे दें, इससे चिन्तायुक्त हुए, उसी समय धर्मवित् ब्रह्माजी के

पुत्र नारदजी आकाश से प्राप्त हुए ॥ १९ ॥ पार्वतीजी के देखने की इच्छा करके मुनियों में श्रेष्ठ नारदजी हिमाचल के निकट आये और हिमालय उनको अर्घ आसन पाद्य देके बोले ॥ २० ॥ हिमवान् ने नारद से कहा कि हे स्वामिन् ! हे मुनिसप्तम ! किस हेतु आप आये हैं, मेरे बड़े भाग्य से आपका उत्तम आगमन

वित् ॥ १९ ॥ नारदो मुनिशार्दूलः शैलपुत्रीदिदृक्षया ॥ दत्त्वार्घ्यं विष्टरं पाद्यं नारदायोक्तवान्गिरिः ॥ २० ॥ शैल उवाच ॥ किमर्थमागतः स्वामिन् वदस्व मनिसत्तम ॥ महद्भाग्येन सम्प्राप्तं त्वदागमनमुत्तमम् ॥ २१ ॥ नारद उवाच ॥ शृणु शैलेन्द्र मद्वाक्यं विष्णुना प्रेषितोऽस्म्यहम् ॥ योग्यं योग्याय दातव्यं कन्यारत्नमिदं त्वया ॥ २२ ॥ वासुदेवसमो नास्ति ब्रह्मविष्णु-शिवादिषु ॥ तस्मै देया त्वया कन्या अत्रार्थे सम्मतं मम ॥ २३ ॥ गिरि-

हुआ ॥ २१ ॥ नारदजी ने कहा कि हे शैलेन्द्र ! हमारे वचन को सुनो, विष्णुजी ने हमको भेजा है कि योग्य कन्यारत्न को किसी योग्य को देना चाहिए ॥ २२ ॥ वासुदेवजी के समान ब्रह्मा, विष्णु, शिव आदिकों में कोई नहीं है इस कारण हमारी सम्मति है कि विष्णुजी कन्या देने के योग्य हैं ॥ २३ ॥ हिमाचल

कहते हैं कि वासुदेव आपही जो कन्या माँगते हैं तो हम तुम्हारे आगमन के गौरव से उनको कन्या देंगे ॥ २४ ॥ इस प्रकार हिमवान् के वचन सुन नारदजी अन्तर्द्धान हो गये और शङ्ख, चक्र, गदाधर पीताम्बरधारी वासुदेव के निकट गये ॥ २५ ॥ और हाथ जोड़ के मुनीन्द्र नारदजी परमेश्वर से कहते

रुवाच ॥ वासुदेव स्वयं देवः कन्यां प्रार्थयते यदि ॥ तदा मया प्रदातव्या त्वदागमनगौरवात् ॥ २४ ॥ इत्येवं गदितं श्रुत्वा तस्य त्वन्तर्दधे मुनिः ॥ ययौ पीताम्बरधरं शङ्खचक्रगदाधरम् ॥ २५ ॥ कृताञ्जलिपुटोभूत्वा मुनीन्द्रस्तमभाषत ॥ नारद उवाच ॥ शृणु देव भवत्कार्यं विवाहो निश्चितस्तव ॥ २६ ॥ हिमवांस्तु तदा गौरीमुवाच वचनं मुदा ॥ दत्तासि त्वं मया पुत्रि देवाय गरुड़ध्वजे ॥ २७ ॥ श्रुत्वा वाक्यं पितुर्देवी सखीभिः सहिता

भये कि आपका कार्य सिद्ध हुआ ॥ २६ ॥ तब हिमवान् आनन्दपूर्वक यह वचन बोले कि हे पुत्रि ! तुम्हें हमने विष्णुजी को दिया ॥ २७ ॥ सखी सहित पार्वतीजी ने पिता के ऐसे वचन सुन सिंह, व्याघ्र, मृगों

करके व्याप्त बन में जाकर सोती भई ॥ २८ ॥ सखी ने कहा कि हे देवि ! हमारे सन्मुख कहो किस कारण दुःखित हो जो तुम चाहोगी उसको मैं निसन्देह करूँगी ॥ २९ ॥ पार्वतीजी ने कहा कि हे प्रिये, सखि ! इस समय हमारे मनोरथ को सुनो कि महादेवजी को निसन्देह अपना पति बनाऊँगी ॥ ३० ॥

वने ॥ सिंहव्याघ्रमृगैर्व्याप्ते तत्र सुप्ता च निर्जने ॥ २८ ॥ सख्युवाच ॥ किमर्थं दुःखिता देवि कथयस्व ममाग्रतः ॥ यत्ते भवत्यभिहितं करिष्येऽहं न संशयः ॥ २९ ॥ पार्वत्युवाच ॥ सखि प्रिये शृणुष्वाद्य मनोभिलषितम्मम ॥ कपर्दिनञ्च भर्त्तारं करिष्येऽहन्न संशयः ॥ ३० ॥ एतन्मे चिन्तितङ्कार्यं तातेन कृतमन्यथा ॥ तस्माद्देहपरित्यागङ्करिष्येऽहं सखि प्रिये ॥ ३१ ॥ पार्वत्या वचनं श्रुत्वा सखीवचनमब्रवीत् ॥ पिता यत्र न जानाति गमि-

इस हमारे विचार को पिताजी ने अन्यथा कर दिया इस कारण हे प्रिये, सखि ! इस देह का त्याग करूँगी ॥ ३१ ॥ पार्वतीजी के वचन को सुनकर सखी ने कहा कि जहाँ पिताजी न जानें वहाँ

चलेंगी ॥ ३२ ॥ इस प्रकार सम्मति करके तुम बड़ वन को प्राप्त हुईं और तुम्हारे पिता हिमवान् गृह-गृह में ढूँढ़ते भये ॥ ३३ ॥ हिमाचल कहते भये कि हमारी कन्या को देव, दानव, किन्नर कौन ले गया, नारदजी से हमने प्रतिज्ञा की थी सो परमेश्वर गरुड़ध्वज को क्या देंगे ॥ ३४ ॥ इस प्रकार चिन्तातुर हो

ष्यामो हि तद्वनम् ॥ ३२ ॥ इत्येवं सम्मतं कृत्वा नीतासि त्वं महद्वनम् ॥ पिता निरीक्षयामास हिमवांस्तु गृहे गृहे ॥ ३३ ॥ केन नीतासि मे पुत्रि देवदानवकिन्नरैः ॥ नारदाय कृतं सत्यं किं दास्ये गरुडध्वजम् ॥ ३४ ॥ इत्येवञ्चिन्तयाविष्टो मूर्च्छितो निपपातह ॥ हाहा कृत्वा प्रधावन्ति लोकास्ते गिरिपुङ्गवम् ॥ ३५ ॥ ऊचुर्गिरिवरं सर्वे मूर्च्छाहेतुं गिरे वद ॥ दुःखस्य हेतुं शृणुत कन्यारत्नं हृतं मम ॥ ३६ ॥ दष्टा वा कालसर्पेण सिंहव्याघ्रेण

पृथ्वी में गिर पड़े और हाहाकार करके सब लोग उनके निकट दौड़े ॥ ३५ ॥ और सब लोग हिमाचल से कहते भये कि मूर्च्छा का क्या कारण है ? हिमवान् ने कहा कि यह नहीं जानते कि परमसुन्दरी मेरी कन्या को कौन हर ले गया ? ॥ ३६ ॥ कालरूप सर्प ने खा लिया अथवा सिंह या व्याघ्र ने मार डाला यह नहीं

जानते कि हमारी पुत्री को किसने हर लिया ? ॥ ३७ ॥ जिस प्रकार वायु से महातरु काँपे इस प्रकार शोकसंतप्त हिमाचल काँपते भये और पार्वतीजी के देखने के हेतु वन से वन को जाते भये ॥ ३८ ॥ सिंह, व्याघ्र, भालू और सर्प से युक्त घोर वन में तुम सखी समेत फिरती थीं ॥ ३९ ॥ तहाँ रम्य नदी को

वा हता ॥ न जाने क्व गता पुत्री केन दुष्टेन वा हृता ॥ ३७ ॥ चकम्पे शोक-सन्तप्तो वातेनेव महातरुः ॥ गिरिर्विनाद्दनं यातस्तदालोकनकार-णात् ॥ ३८ ॥ सिंहव्याघ्रैश्चभल्लूकैरहिभिस्सहितंवनम् ॥ त्वं चापि विपिने घोरे व्रजन्ती सखिभिः सह ॥ ३९ ॥ तत्र दृष्ट्वा नदीं रम्यां तत्तीरे च महा-गुहाम् ॥ तां प्रविश्य सखीसार्द्धमन्नभोगविवर्जिता ॥ ४० ॥ संस्थाप्य बालु-कापिण्डं पार्वत्या सहितं मम ॥ या तृतीया भाद्रपदे हस्तनक्षत्र-

और उसके तीर में बड़ी गुहा को देख अन्न-भोग विवर्जित सखी-सहित उसी में प्रवेश किया ॥ ४० ॥ महादेवजी पार्वतीजी से कहते हैं कि हमारी मूर्ति सहित पार्वती की मूर्ति स्थापित करके हस्त नक्षत्र,

तृतीया विषे व्रत-पूजा किया ॥ ४१ ॥ और बाजा, और गाना से रात्रि में जागरण किया। महादेवजी कहते हैं कि उस व्रत के प्रभाव से हमारा आसन चलित हुआ ॥ ४२ ॥ तब हम वहाँ प्राप्त हुए जहाँ तुम सखी सहित थीं और हमने यह कहा कि हम प्रसन्न हैं वर माँगो ॥ ४३ ॥ पार्वतीजी ने कहा कि हे

संयुता ॥ ४१ ॥ तत्र वादित्रगतिेन रात्रौ जागरणं कृतम् ॥ तेन व्रतप्रभावेण आसनं चलितम्मम ॥ ४२ ॥ सम्प्राप्तोऽहन्तदा तत्र यत्र त्वं सखिभिस्सह ॥ प्रसन्नोऽस्मि मया प्रोक्तं वरम्ब्रूहि वरानने ॥ ४३ ॥ पार्वत्युवाच ॥ यदिदेवप्रसन्नोऽसि भर्त्ता भवतु मे हर ॥ तथेत्युक्त्वा तु तां देवीं कैलासं पुनरागतः ॥ ४४ ॥ ततः प्रभाते सम्प्राप्ते नद्यां सर्वं विसर्जितम् ॥ पारणं तु कृतं तत्र सख्या सार्द्धं त्वया शुभम् ॥ ४५ ॥ हिमवानपि तं देशमाज-

देव ! आप प्रसन्न हो तो हमारे पति हो, यह सुन महादेवजी ने पार्वती से कहा—बहुत अच्छा, यह कह कैलाश को जाते भये ॥ ४४ ॥ तत्पश्चात् सम्पूर्ण पूजा की सामग्री नदी में छोड़के अपनी सखी-सहित पारण किया ॥ ४५ ॥ और हिमवान् भी उसी बड़े वन में आये चारों ओर देखते, विह्वल हो, फिर गिर

पड़े ॥४६॥ हिमवान् ने नदी के तीर पर सोती हुई दो कन्याएँ देखीं और गोद में ले रोने लगे ॥ ४७ ॥ सिंह, व्याघ्र, साँप, भालू करके दूषित इस वन में तुम किस प्रकार रहीं ॥ ४८ ॥ पार्वतीजी ने कहा कि हे तात ! सुनो, हमने जाना कि हमको तुम विष्णु को देवोगे, यह हमारी इच्छा के प्रतिकूल था, इस कारण इस वन को

गाम वनं घनम् ॥ चतुराशान्निरीक्षंस्तु विह्वलः पतितः पुनः ॥ ४६ ॥ दृष्ट्वा तत्र नदीतीरे प्रसुप्तङ्कन्यकाद्वयम् । उत्थाप्योत्सङ्गमारोप्य रोदनं कृतवान्गिरिः ॥ ४७ ॥ सिंहव्याघ्राहिभल्लूकैर्वने दुष्टे कुतः स्थिता ॥ ४८ ॥ पार्वत्युवाच ॥ शृणुतात मया ज्ञातं त्वं दास्यसीश्वराय माम् । तदन्यथा कृतं तात तेनाहं वनमागता ॥ ४९ ॥ ददासि तात यदि मां गिरीशाय तदा गृहम् ॥ आगमिष्यामि नैवञ्चेदिह स्थास्यामि निश्चितम् ॥ ५० ॥ तथेत्युक्त्वा हिमवता नीतासि त्वं गृहम्प्रति ॥ पश्चाद्दत्ता त्वमस्माकं कृत्वा वैवाहिकीं

मैं चली आई ॥ ४९ ॥ हे तात ! जो तुम हमें महादेवजी को देव तो हम गृह को आवेंगी नहीं तो इसी स्थान में रहेंगी ॥ ५० ॥ बहुत अच्छा यह कहके हिमवान् तुमको घर लाये उसके पीछे विवाह की रीति से तुमको

हमें दिया ।। ५१ ।। महादेवजी पार्वतीजी से कहते हैं कि उसी व्रत के प्रभाव से तुमने ऐसे सौभाग्य को सिद्ध किया, अब तक इस व्रतराज को किसी से नहीं कहा ।। ५२ ।। हे देवि ! जिस प्रकार इस व्रतराज का नाम हुआ, वह सुनो, आलि अर्थात् सखी करके हरी गई इससे हरितालिका नाम हुआ ।। ५३ ।। पार्वतीजी महादेवजी

क्रियाम् ॥ ५१ ॥ तेन व्रतप्रभावेण सौभाग्यं साधितं त्वया ॥ अद्यापि व्रत-राजस्तु न कस्यापि निवेदितः ॥ ५२ ॥ नामास्य व्रतराजस्य शृणु देवि यथाऽभवत् ॥ आलिभिर्हरिता यस्मात्तस्मात्सा हरितालिका ॥ ५३ ॥ पार्वत्युवाच ॥ नामेदङ्कथितं तस्य विधिं वद मम प्रभो ॥ किम्पुण्यङ्किम्फल-ञ्चास्य केन च क्रियते व्रतम् ॥ ५४ ॥ ईश्वर उवाच ॥ शृणु देवि व्रतं वक्ष्ये

से कहती हैं कि व्रत के नाम को आपने कहा अब विधि कहिये, कौन पुण्य और कौन फल और किससे यह व्रत किया जाय ।। ५४ ।। महादेवजी बोले कि हे देवि ! स्त्रियों के उत्तम व्रत को कहते हैं सुनो जो

सौभाग्य की इच्छा करती हो तो इस व्रत को यत्नपूर्वक करो ॥५५॥ और नानाप्रकार के चित्र-विचित्र पट्ट वस्त्र से आच्छादित करके केला के स्तम्भ से शोभित तोरणादिक करै ॥ ५६ ॥ और सुगन्धित चन्दन से गृहमण्डप

नारीणां व्रतमुत्तमम् ॥ करिष्यसि प्रयत्नेन यदि सौभाग्यमिच्छसि ॥ ५५ ॥ तोरणादिप्रकर्त्तव्यं कदलीस्तम्भमण्डितम् ॥ आच्छाद्य पट्टवस्त्रैस्तु नानावर्णविचित्रितैः ॥ ५६ ॥ चन्दनेन सुगन्धेन लेपयेद् गृहमण्डपम् ॥ शङ्खभेरीमृदङ्गैश्च कारयेद् बहुनिस्स्वनैः ॥ ५७ ॥ नानामङ्गलगीतञ्च कर्त्तव्यं मम सद्मनि ॥ स्थापयेद् बालुकालिङ्गं पार्वत्यासहितं मम ॥ ५८ ॥ पूजयेद् बहुपुष्पैश्च गन्धधूपादिभिर्नवैः ॥ नानाप्रकारैर्नैवेद्यैः पूजयेज्जागरं-

का लेप करै और नानाप्रकार के शङ्ख भेरी मृदङ्गादि को बजावै ॥ ५७ ॥ और नानाप्रकार के मङ्गल गीत हमारे गृह में करै तहाँ पार्वती सहित हमारी बालू की मूर्ति स्थापित करै ॥ ५८ ॥ और पुष्प, गन्ध, धूप और

नानाप्रकार की नैवेद्य से पूजा करके जागरण करै ॥ ५९ ॥ नारियर, सुपारी, जम्भीरी, बकुल, बीजपूर, नारङ्गी और अन्य फलों से ॥ ६० ॥ ऋतुकालोद्भव अनेक प्रकार के कन्दमूल और धूप गन्ध आदि से इस मन्त्र से पूजा करै ॥ ६१ ॥ शिव, शान्त, पञ्चवक्त्र, शूली और नन्दि, भृंगि, महाकाल गणों से युक्त आपको

चरेत् ॥५९॥ नारिकेलैः पुङ्गफलैर्जंबीरीबकुलैस्तथा । बीजपूरैस्सनारंगैः फलैश्चान्यैश्च भूरिशः ॥ ६०॥ ऋतुकालोद्भवैर्भूरिप्रकारैः कन्दमूलकैः ॥ धूपादिगन्धैश्च तथा मन्त्रेणानेन पूजयेत ॥ ६१॥ नमश्शिवायशान्तायपञ्चवक्त्रायशूलिने ॥नन्दिभृंगिमहाकालगणयुक्तायशम्भवे ॥ ६२ ॥ शिवायै हरकांतायैप्रकृत्यै सृष्टिहेतवे ॥ शिवायैसर्वमांगल्यैशिवरूपे जगन्मये ॥ ६३ ॥ शिवे कल्याणदे नित्यशिवरूपे नमोस्तुते ॥ शिवरूपे नमस्तुभ्यं शिवायै सततन्नमः ॥ ६४ ॥ नमस्ते ब्रह्मरूपिण्यै जगद्धात्र्यैनमोनमः ॥ संसार-

नमस्कार है ॥ ६२ ॥ शिवा, हरकान्ता, प्रकृति, सृष्टिहेतु, सर्वमांगल्या, शिवरूपा, जगन्मया ॥ ६३ ॥ शिवा, कल्याणदा, शिवरूपा तुम्हारे लिये नमस्कार है, शिवरूपा शिवा को नमस्कार है ॥ ६४ ॥ ब्रह्मरूपिणी,

जगद्धात्री तुम्हारे लिये नमस्कार है हे सिंहवाहिनि ! संसार के भय के संताप से हमारी रक्षा करो ॥ ६५ ॥ हे महेश्वरि ! जिस कामना से मैंने आपकी पूजा की है उसी से राज्य सौभाग्य सम्पत्ति को देव ॥ ६६ ॥ महादेवजी कहते हैं कि हे देवि ! इस मंत्र से हमारे साथ जो तुम्हारी पूजा करके और विधान से कथा

भयसंतापात्त्राहिमांसिंहवाहिनि ॥ ६५ ॥ येन कामेन देवेशि पूजितासि महेश्वरि ॥ राज्यं सौभाग्यसम्पत्तिं देहि मामम्ब पार्वति ॥ ६६ ॥ मंत्रेणानेन देवि त्वां पूजयित्वा मयासह ॥ कथांश्रुत्वाविधानेन दद्यादन्नंचभूरिशः॥ ६७॥ ब्राह्मणेभ्योयथाशक्त्यादेयावस्त्रहिरण्यगाः । अन्येभ्योदीयते भूरि स्त्रीणां वा भूषणादिकम् ॥ ६८ ॥ भर्त्रासहकथां श्रुत्वाभक्तियुक्तेन चेतसा ॥ कृत्वा व्रतेश्वरंदेवि सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ ६९ ॥ सप्तजन्म भवेद्राज्यं सौभाग्यं चैव

सुनके बहुत सा अन्न दान दे ॥ ६७ ॥ और यथाशक्ति ब्राह्मणों को वस्त्र, सुवर्ण, गौ दे अन्य ब्राह्मणों को स्त्रियों का भूषण दे ॥ ६८ ॥ और अपने पति सहित भक्तिपूर्वक कथा सुने हे देवि ! इस व्रतेश्वर के करने से सम्पूर्ण पापों से छूट जाता है ॥ ६९ ॥ और सात जन्म तक राज्य होता और सौभाग्य बढ़ता है और

तृतीया के विषे जो स्त्री आहार करती है ॥ ७० ॥ वह सात जन्म तक वन्ध्या और जन्म-जन्म विधवा दरिद्रा और पुत्रशोक को प्राप्त हो कर्कशा और दुःखभागिनी होती है ॥ ७१ ॥ जो स्त्री व्रत को नहीं करती वह घोर नरक में पाचित होती है। अन्न खाने से शूकरी फल खाने से बँदरिया होती है ॥ ७२ ॥ जल पीने से

वर्द्धते ॥ तृतीयायां तु या नारी आहारं कुरुते यदि ॥ ७० ॥ सप्तजन्म-
भवेद्वन्ध्या वैधव्यं जन्मजन्मनि ॥ दारिद्र्यं पुत्रशोकञ्च कर्कशा दुःख-
भागिनी ॥ ७१ ॥ पच्यते नरके घोरे नोपवासं करोति या ॥ अन्नाहारात्
शूकरी स्यात् फलभक्षेण मर्कटी ॥ ७२ ॥ जलौकाजलपानेनक्षीराहारेण
सर्पिणी ॥ मांसाहाराद्भवेद्व्याघ्री माजारीदधिभक्षणात् ॥ ७३ ॥ मिष्ठान्नात्
पिपीलिकाजन्म मक्षिका सर्वभक्षणात् ॥ निद्रावशेनाजगरीकुक्कुटीपति-

जोंक दूध पीने से सर्पिणी मांस खाने से बाघिनी और दही खाने से बिल्ली होती है ॥ ७३ ॥ मिठाई खाने से चींटी होती है तथा अन्य सब प्रकार की चीजें खाने से मक्खी होती है, सोने से अजगरी होती है और पति

से छल करने से मुर्गी होती है ॥ ७४ ॥ इसलिये यत्नपूर्वक स्त्रियों को व्रत करना चाहिए। और चाँदी, सुवर्ण, ताम्र, वैणव या मिट्टी के पात्र में ॥ ७५ ॥ अन्न धरके वस्त्र फल दक्षिणा सहित ब्राह्मण को बायन देके पारण करै ॥ ७६ ॥ महादेवजी पार्वतीजी से कहते हैं कि इस प्रकार जो स्त्री करती है वह तुम्हारे

वञ्चनात् ॥ ७४ ॥ तस्मात्सर्वप्रयत्नेनव्रतं कुर्युः सदा स्त्रियः। रजते काञ्चने ताम्रे वैणवे चाथ मृन्मये ॥ ७५ ॥ भाजने विन्यसेदन्नं सवस्त्रफलदक्षिणम् ॥ वायनं द्विजवर्याय दद्यादन्नं च पारणम् ॥ ७६ ॥ एवं विधिं या कुरुते च नारी त्वया समाना रमते स्वभर्त्रा ॥ भोगाननेकां भुविभुज्यमानासायुज्य मन्ते लभते हरेण ॥ ७७ ॥ अश्वमेधसहस्राणि वाजपेयशतानि च । कथाश्रवण-

सदृश अपने पति के साथ रमण करती और पृथ्वी में अनेक प्रकार के भोग भोगती हुई अन्त्य अवस्था में हर सायुज्य को प्राप्त होती है ॥ ७७ ॥ इस कथा के श्रवणमात्र से मनुष्य हजार अश्वमेध यज्ञ और सौ वाजपेय

यज्ञ के फल को प्राप्त होता है ॥ ७८ ॥ हे देवि ! यह उत्तम व्रत तुम्हारे सामने कहा जिसके अनुष्ठानमात्र से

मात्रेण तत्फलं प्राप्यते नरैः ॥ ७८ ॥ एतत्ते कथितं देवि तवाग्रे व्रतमुत्तमम् ॥ कोटियज्ञकृतं पुण्यं यस्यानुष्ठानमात्रतः ॥ ७९ ॥ इति भविष्योत्तरपुराणे हरितालिकाव्रतम् ॥

मनुष्य कोटि यज्ञ के फल को प्राप्त होता है ॥ ७९ ॥ इति हरितालिकाव्रतकथा टीका सम्पूर्ण ॥

——:०:——

अथ उद्यापनविधि । पार्वतीजी श्रीमहादेवजी से पूछती हैं कि हे सुरेश्वर ! तृतीया के उद्यापन की विधि कहिये । व्रत की पूर्णता के लिये भक्तिपूर्वक मेरी श्रवण करने की इच्छा है । श्रीमहादेवजी कहते हैं कि जिस उद्यापन के अनुष्ठानमात्र ही से व्रत पूर्ण होता है ऐसी उद्यापन की विधि कहते हैं । केला के स्तम्भ से शोभित चार स्तम्भ लगा घण्टी, चमर और कमल से शोभित करके चन्दन, अगरु और कपूर से मण्डप को लीपकर बीच में पँचरंगा वितान बाँधे और उसके मध्य में पाँच रंग का सुन्दर कमल बनाकर उसके ऊपर द्रोणमात्र व्रीहि धरे और सुवर्ण, चाँदी या ताम्र का कलश रखकर उसमें पंचरत्न और सर्वौषधि से युक्त करके उस कलश के ऊपर सुवर्ण या चाँदी का पात्र धरके वृषभ पर चढ़े हुए चाँदी के महादेव और सम्पूर्ण अंगों से युक्त सुवर्ण की पार्वतीजी को उसी कलश पर रखकर गन्ध पुष्प से पूजा करे । और कथा श्रवणपूर्वक रात्रि को जागरण करे । तत्पश्चात् प्रातःकाल उठके विमल जल में स्नान आदि कर्म करके पूर्ववत् महादेवजी की पूजा करके पीछे अपने वेद के अनुसार अग्नि स्थापन करके होम करे । पहिले नवग्रह का होम करके तदनन्तर शिवमंत्र और गौरीमंत्र से अष्टोत्तरशत या अट्ठाईस बार तिल, यव, घृत से हवन करे । इस प्रकार होम करके सुवर्ण, रत्न और वस्त्र से आचार्य की पूजा करे । गौ और उत्तम बिछौनों सहित शय्या दान दे और सस्त्रीक सोलह ब्राह्मणों को पक्वान्न से भोजन करावे और सोलह सौभाग्य की वस्तु और वस्त्र, सोलह

ताम्रपात्र सोलह ब्राह्मणों को दे। और अन्य ब्रह्मणों को शिवजी की प्रसन्नता के लिये भूयसी दक्षिणा देवे। दूसरे दिन अपने इष्ट मित्रों सहित भोजन करे। इस प्रकार जो इस व्रतराज को करे वह सात जन्म तक सम्पूर्ण सौभाग्य को प्राप्त हो ॥ इति सोद्यापनहरितालिकाव्रतम् समाप्तम् ॥

इति हरितालिकाव्रत कथा

भाषा टीका सहित

हमारे धार्मिक प्रकाशन

सुखसागर	२४०.००
भक्तमाल भाषा अर्थात् भक्तकल्पद्रुम लेखक-श्री प्रताप सिंह	६०.००
शिवपुराण-भाषा ग्यारह खंडों में	१६०.००
रामायण तुलसीदास कृत टीका पं० सूर्यदीन शुक्ल	१८०.००
महाभारत भाषा सजिल्द	१८०.००
रामायण तु०कृ०टीका पं० लक्ष्मण प्रसाद भारद्वाज सचित्र सजिल्द	१४६.००
भक्तमाल नाभाजी सटीक बड़ी सजिल्द	२०१.००
भक्तिसागर चरणदास	१००.००
योगवशिष्ठ संपूर्ण दो भागों में	४७५.००
विश्राम सागर सटीक सचित्र सजिल्द	२२५.००
अनुराग सागर	२१.००
अष्टावक्र गीता सटीक	६६.००
चाणक्य नीतिदर्पण	२०.००
चित्रकूट महात्यम	७.००
प्रेम सागर सजिल्द	१२०.००
हनुमान चालीसा	५.००
स्त्रीसुबोधिनी	१००.००
सुन्दर विलास	२१.००
सुन्दर कांड गुटका	३.००
हनुमन्त बावनी	१.००
हरितालिका	५.००
भगवद्गीता भाषा सजिल्द	२५.००
शिव चालीसा	१.००
शतपंच चौपाई	३.००
महाभारत सबल सिंह चौहान दोहा चौपाई	१२५.००
ब्रज विलास	६०.००
आल्हखण्ड सजिल्द ललिता प्रसाद कृत	१२०.००